सं. मो.वि./ग्राई०डी०/यमुना/70-85/31376.—चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. (1) हुडेवाला फार्म सगाधरी, (2) बलारपुर इण्डस्ट्रीज श्री गोवाल डिविजन, यमुनानगर के श्रीमक श्री राम किशन मार्फत श्री इन्द्रसैन बंसल छाता नाला-गढ़िया, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बांद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रन, भौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियाँ का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रेल, 1984, हारा उक्त प्रविसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनियंव एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों सथा श्रमिक के कीच या तो विवादग्रस्त मामला है वा उक्त विवाद है सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है ---

भोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई भिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्चना भर्म • 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 के द्वारा उक्त ग्रिविद्यास्त की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो, विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

स्था श्री हरिया राम की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? दिनाक 2 सितम्बर, 1986

सं धो वि । रोहतक | 66-86 | 31813 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं किरण ट्रेडिंग कम्पनी, वहां दुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री सेवक मार्फत श्री ग्रार. एस. दिह्या, वहां दुरगढ़ पोटरीज एण्ड जनरल लेवर यूनियन, बहां दुरगढ़ (रोहतक) तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में को श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, अब, ग्रीद्योगिक विवाद प्रियितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिरितयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांबः 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रीधिनियम की धारा 7 के ग्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादमस्त या उससे. सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवन्धकों तथा. श्रीक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित है:—

वया श्री सेटक के रेट थ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि । रोहतक / 62-86 / 31821. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मोहन स्पीनिंग मिल, रोहतक, के समिक श्री पंचदेव सिंह, पुत्र श्री झूरी सिंह मार्फत पंडित पतेह चन्द वैध, वावरा मोहल्ला, रोहतक तथा उसके श्रवन्यकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्री द्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वाळनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिक्सियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक व नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मीस में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री पंचदेव की सेवाओं का समापन वासोचित हका ठीक है? यदि नहीं, तो वह विस पाहल का हकता ह